IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पद – असि0 प्रो0 – एशियन ग्रुप कॉलेज ऑफ एजुकेशन

डा0 बबीता देवी

सरसावा, सहारनपुर।

प्रस्तुत शोध पत्र में समावेशी शिक्षा में विशिष्ट बालकों की शिक्षा समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है क्योंकि अनेक प्रयत्नों के बाद भी इन बालकों की स्थिति में कोई सुधार नहीं आया, ये बालक आज भी समाज की मुख्य धारा से नहीं जुड़ पाए इसीलिए प्रस्तुत शोध में समावेशी शिक्षा में विशिष्ट बालकों को किस प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है तथा उनके निराकरण पर सुझाव देने का प्रयास किया गया ताकि इन बालकों को समाज की मुख्य धारा में शामिल किया जाये तथा यह केवल कागजी प्रक्रिया न होकर वास्तविक रूप से व्यवहार में उपयोगी होना चाहिए व विशिष्ट बालकों को समावेशी शिक्षा में शामिल करते हुए उन्हें देश तथा समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए तैयार किया जा सके।

प्रमुख शब्दावली – समावेशी शिक्षा, विशिष्ट बालक

प्रस्तावना – बालक, समावेशी शिक्षा की आवश्यकता एवं समस्याएँ

समावेशी शिक्षा के अर्थ एवं परिभाषाएँ –

समावेशी शिक्षा वह होती है, जिसके द्वारा विशिष्ट क्षमता वाले बालक जैसे मन्दबुद्धि, अंधे बालक, बहरे बालक तथा प्रतिभाशाली बालकों को ज्ञान प्रदान किया जाता है।

समावेशी शिक्षा के द्वारा सर्वप्रथम छात्रों के बौद्धिक व शैक्षिक स्तर की जांच की जाती है, तत्पश्चात उन्हें दी जाने वाली शिक्षा का स्तर निर्धारित किया जाता है। अतः यह एक ऐसी शिक्षा प्रणाली है जो कि विशिष्ट क्षमता वाले बालकों हेतु ही निर्धारित की जाती है, ऐसी शिक्षा ही समावेशी शिक्षा कहलाती है।

स्टीफन तथा ब्लैकहर्ट के अनुसार – ''शिक्षा की मुख्य धारा का अर्थ बाधित बालकों की सामान्य कक्षाओं में शिक्षण व्यवस्था करना है। यह समान अवसर मनो–वैज्ञानिक सोच पर आधारित है जो व्यक्तिगत योजना के द्वारा उपर्युक्त सामाजिक मानकीयकरण और अधिगम को बढ़ावा देती है।

"Mainstreaming is the education of Mildy handicapped children in the regular classroom. It is based on the Philosophy of 'Equal Opportunity that implemented through individual planning to promote appropriate learning achievement and social normalization.'

यरशेल के अनुसार – ''समावेशी शिक्षा के कुछ कारण योग्यता, लिंग, प्रजाति, जाति, भाषा, चिन्ता स्तर, सामाजिक – आर्थिक स्तर, विकलांगता, लिंग व्यवहार या धर्म से संबंधित होते है।

यूनेस्को (1994) – ''समावेशी शिक्षा सभी शिक्षार्थियों की विभिन्न आवश्यकताओं को संबोधित करने और उनका समाधान करने की एक प्रक्रिया है, जिसमें सीखने में भागीदारी बढ़ाकर और शिक्षा के भीतर और उससे बहिष्कार को कम करके ऐसा किया जाता है।

कोठारी आयोग – (भारत) विकलांग बच्चों की शिक्षा सामान्य शिक्षा प्रणाली का ही एक अभिन्न अंग होनी चाहिए जहाँ अंतर केवल पढ़ाने की विधि और साधनों में हो न की स्थान में।

अतः कहने का तात्पर्य है कि समावेशी शिक्षा एक ऐसी व्यवस्था है, जो शारीरिक, मानसिक, सामाजिक या आर्थिक रूप से भिन्न सभी बच्चों का बिना किसी भेदभाव के एक ही सामान्य कक्षा में एक साथ पढ़ने का अधिकार व अवसर प्रदान करती है। यह शिक्षा प्रणाली विविधता का सम्मान करती है और विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों को सामान्य बच्चों के साथ शामिल कर उन्हें आत्मनिर्भर बनाती है।

समावेशी शिक्षा की विशेषताएँ –

1 बालक की व्यक्तिगत शक्तियों का विकास।

2 सभी को शिक्षा व सीखने के समान अवसर।

3 एक–दूसरे के प्रति सहायता व सहानुभूति की भावना जाग्रत।

4 बालकों की अधिगम अक्षमता को पता लगाकर उन्हें दूर करने का प्रयास।

5 शिक्षण समस्याओं की जानकारी प्रदान करना।

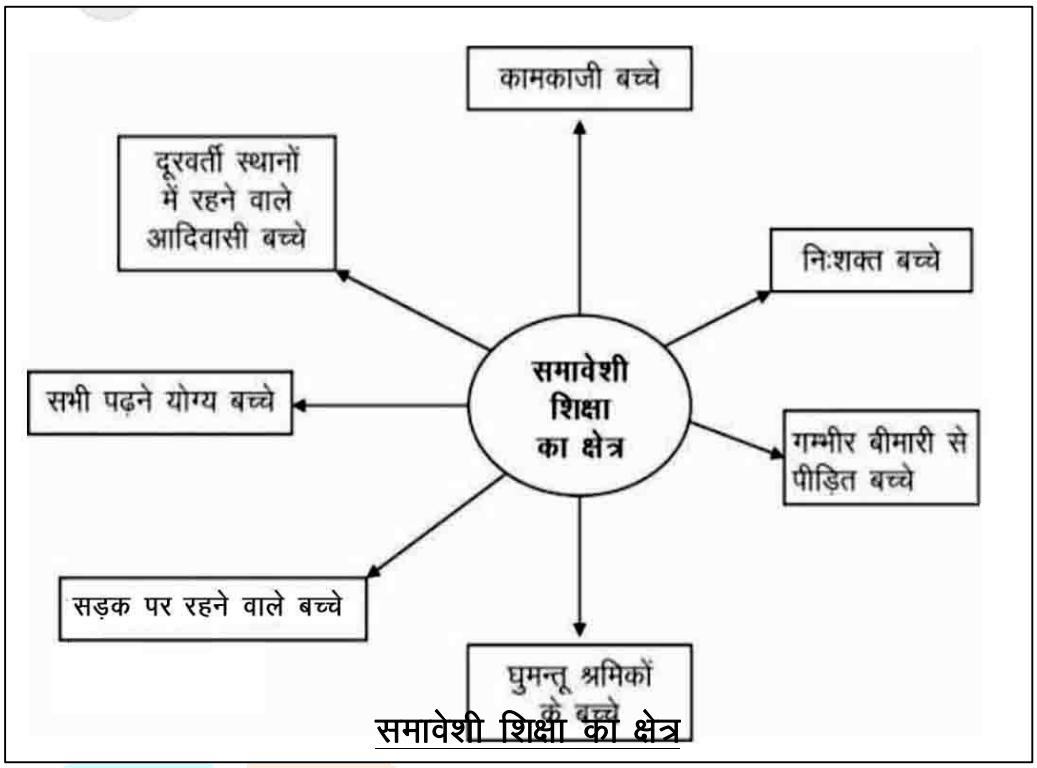

समावेशी शिक्षा का क्षेत्र

समावेशी शिक्षा में विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों की समस्याएँ –

किसी भी बालक को शिक्षा प्रदान करने से पूर्व उसके व्यक्तित्व को जानना आवश्यक है, समावेशी शिक्षा में बालकों के लिए यह अत्यंत आवश्यक हो जाता है क्यों कि विशिष्ट बालक की विशेषताएँ, साधारण बालकों की तुलना में अधिक तीव्र व विचित्र होती है। कुछ स्थानों पर कक्षा का बड़ा आकार एवं छात्र शिक्षक अनुपात का कम होना सभी छात्रों एवं शिक्षकों के लिए एक समस्या है और एक कक्षा में अत्यधिक विविधता भी शिक्षकों के उत्साह को कम कर देता है। दूसरा कुछ मामलों में छात्रों को उनकी क्षमता के अनुसार सीखने के लिए प्रोत्साहित न करना उन्हें मंद अधिगम की ओर ले जाता है। सबसे बुरी स्थिति तब हो जाती है जब शिक्षकों द्वारा छात्रों को दंडित किया जाता है। इस तरह के व्यवहार से विकलांग बच्चे पिछड़ जाते हैं। देश में शिक्षा व्यवस्था के सुधार में संतुलन की मुख्य भूमिका निभाता है। कई बच्चे स्कूल दूर होने के कारण लंबी दूरी तय करते हैं। पर्याप्त परिवहन की कमी, मुश्किल इलाके, खराब सड़के विकलांग बालकों के लिए समस्या उत्पन्न करते है। इसके अलावा समावेशी शिक्षा में पानी व सफाई संबंधी समस्याओं को भी शामिल किया जा सकता है।

सुझाव – इन बालकों के माता–पिता व शिक्षक इनकी समस्याओं को इस रूप में समझे कि वे भी ऐसे व्यक्ति है जिन्हें सभी के समान आदर, सम्मान, विश्वास, स्नेह और सुरक्षा की आवश्यकता है।

2– समावेशी बालकों के व्यक्तित्व के विषय में पूर्ण जानकारी एवं समझ, शिक्षकों के लिए समावेशी बालकों के शिक्षण प्रशिक्षण की प्रक्रिया को सरल बना देगी।

3– समावेशी बालकों को भी सामान्य बालकों के समान औपचारिक शिक्षा की आवश्यकता होती है। उनके लिए ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए कि उन्हें कम से कम पढ़ने–लिखने व सामान्य गणित का ज्ञान हो जाए।

4– आधुनिकीकरण व नयी तकनीकों के माध्यम से विशिष्ट बालकों को औपचारिक शिक्षा दी जा सकती है। अतः विशिष्ट बालकों के लिए उचित शैक्षिक तकनीकों की व्यवस्था की जानी चाहिए।

5– समावेशी बालकों के शिक्षा का स्तर उनके शारीरिक एवं मानसिक स्तर के अनुरूप होनी चाहिए।

6– स्कूलों में अति समावेशी वातावरण की नहीं बल्कि समावेशी प्रशिक्षित शिक्षक की अत्यंत आवश्यकता है। इस कमी को दूर करने का प्रयास करना चाहिए।

7– कक्षा का बड़ा आकार एवं छात्र शिक्षक अनुपात कम होने चाहिए तथा शिक्षकों की संख्या को बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए।

8– समावेशी शिक्षा द्वारा बालकों के व्यवसायिक प्रशिक्षण पर अधिक बल देना चाहिए। विशेष आवश्यकता वाले बालकों को रोजगार परक शिक्षा व प्रशिक्षण देना चाहिए।

9– स्कूलों व कॉलेजों की दूरी कम करनी चाहिए। विद्यालय एवं महाविद्यालय नगरों से अत्यधिक दूर न हो जिससे विशेष आवश्यकता वाले बालक आसानी से जा सके।

10– विद्यालयों में शौचालय एवं पानी की व्यवस्था नीचे होनी चाहिए एवं आसानी से उपलब्ध होनी चाहिए।

निष्कर्ष –

वर्तमान समय में प्रत्येक राष्ट्र अपने नागरिकों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रयासरत है क्योंकि समाज के विकास पर ही किसी राष्ट्र का भविष्य निर्भर करता है। इसलिए समावेशी शिक्षा की ओर अत्यधिक ध्यान दिया जा रहा है परंतु इसके साथ ही उन बच्चों की शिक्षा पर ध्यान दिया जाना चाहिए जो किसी कारणवश शिक्षा से वंचित है और इसमें विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की संख्या सर्वाधिक है। अतः वर्तमान समय में उनकी समावेशी शिक्षा की बात विश्व समुदाय कर रहा है। जो दोनों ही प्रकार के बालकों के लिए अत्यधिक उपयोगी है। जरूरत तो है उनकी बस शिक्षा की बात तथ्यात्मक रूप से की जाए, उनकी परिस्थितियों का अध्ययन करके उचित नीतियाँ बनाई जायी जिससे उनके जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पड़े।

– संदर्भ ग्रंथ सूची –

नारंग एम के एवं अग्रवाल जे0सी0 (2016–17) समावेश शिक्षा मेरठ, अग्रवाल पब्लिकेशन।

Karten MC 2004 Successful inclusion strategies for secondary education.

कदम तेजस्विनी (1988–98) ''सैद्धान्तिक अधिष्ठान, शिक्षा शास्त्र नासिक।

Rayner 5, 2007 managing special and inclusion Education, Sage Publication.